भाभी की ननद और मेरा लण्ड-2

“दलबीर सिंह मैंने टयूब बुझा कर नाइट बल्ब जला दिया, और आकर मैं भी अपनी रजाई में घुस गया और आँखें बंद कर लीं। पर नींद का तो दूर-दूर तक पता नहीं था। मन ही मन मैं कुढ़ रहा था कि यह माला कहाँ दाल भात में मूसलचंद आन पड़ी। इस बात को वो ही […] …”

Story By: dalbir singh (dr.dalbir.singh)
Posted: Saturday, January 11th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: भाभी की ननद और मेरा लण्ड-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

भाभी की ननद और मेरा लण्ड-2

दलबीर सिंह

मैंने ट्यूब बुझा कर नाइट बल्ब जला दिया, और आकर मैं भी अपनी रजाई में घुस गया और आँखें बंद कर लीं।
पर नींद का तो दूर-दूर तक पता नहीं था। मन ही मन मैं कुढ़ रहा था कि यह माला कहाँ दाल भात में मूसलचंद आन पड़ी।
इस बात को वो ही समझ सकता है जो ऐसे हालात से गुज़रा हो।

लगभग बीस-पच्चीस मिनट बाद मुझे भाभी वाली रजाई में कुछ हलचल सी महसूस हुई। मैंने धीरे से करवट उनकी तरफ ले ली और मैंने देखा कि वास्तव में ही उनकी रजाई में तो तूफ़ान सा मचा पड़ा था। अब तो सिसकारियों की आवाज़ भी आ रही थी।

अचानक मुझे धीरे से फुसफुसाने की आवाज़ आई- भाभी, कहीं बिट्टू न जग जाये।
भाभी बोलीं- कोई बात नहीं, इससे तो फायदा ही होगा।

मैं भी भौंचक्का सा था क्योंकि तब मुझे किताबों में लिखा लेस्बियन सेक्स मात्र कल्पना ही लगता था। लेकिन आज वास्तव में ये देख कर मेरे 'छोटू ; ने भी अंगड़ाइयाँ लेनी शुरू कर दी थीं। अब भाभी की बात भी समझ में आ गई थी कि जब हमारी रजाई खूब हिले तो तब रजाई को अपनी तरफ से उठा देना।

मैंने अभी और कुछ देर इंतज़ार करने का फैसला लिया और अपनी सांस भी इतने धीरे ले रहा थी कि मेरे सांस लेने की आवाज़ न हो, उन दोनों की पूरी बात मेरी समझ में आए।

तभी भाभी की आवाज़ आई- माला, मैं क्या करूँ यार !तेरा भाई एक तो महीने में एक-

आध बार ही करता है और झड़ भी जल्दी जाता है। बता मेरी माला बहन, मैं क्या करूँ ?
तो माला बोली- भाभी, आप कोई दोस्त बना लो ना !
भाभी बोलीं- सोचती मैं भी यही हूँ, पर बदनामी से डरती हूँ। कोई अपना सा हो जो बाहर बदनाम न करे।

फिर उनकी आवाज़ें बंद हो गईं और फिर से चूमने की और सिसकारियों की आवाज़ें आने लगीं- आआआह भाभीइइइ आआईईईईई !हालाँकि कि ये आवाज़ें बहुत हल्की थीं, पर मेरा जोश बहुत बढ़ गया था।

अब उनकी रजाई काफी ऊँची हो गई थी और काफी हिलजुल हो रही थी रजाई में। मैं समझ गया कि अब मेरा रोल शुरू होने वाला है, क्योंकि मुझे साफ़ पता चल रहा था कि अब दोनों की कमीज़ें उतर चुकी हैं। सीत्कारों और सिसकियों की आवाज़ें तेज़ हो गई थीं।

अब तक तो मैं जैसे-तैसे सब्र करे पड़ा था। पर अब धीरे से मैंने उनकी रजाई का कोना उठाया। क्योंकि कमरा तो रूम हीटर की वजह से पूरी तरह गर्म था, और इस वक्त वो दोनों भी पूरे जोश में थीं। इसलिए उन्हें एकाएक तो पता भी नहीं चला कि मैं उनका खेल देख रहा हूँ।

मैंने देखा कि भाभी ने अपना सर माला की चूची पर लगा रखा था और उसे मुँह में पूरी भर कर चूस रही थीं। माला का एक हाथ रजाई में भाभी की कमर पर था और दूसरा भाभी की गर्दन पर लिपटा हुआ था। माला ने भाभी का सर पूरे ज़ोर से अपने सीने पर भींच रखा था।

अब मुझ से रहा नहीं गया और मैं अचानक बोल ही पड़ा- भाब्भी, मैं की अछूत हाँ ?'(भाभी, मैं क्या अछूत हूँ ?)

और मेरे ऐसा बोलते ही एकाएक दोनों की हरकतों को जैसे ब्रेक लग गया और उनकी

हालत ऐसे हो गई जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो।
माला तो एकदम कांपने लग गई और चेहरा पीला पड़ गया, पर भाभी एकदम संभल गई। क्योंकि इस सारी कहानी की सूत्रधार तो वो ही थीं।

भाभी एकदम मेरी तरफ पलटीं, मेरा हाथ पकड़ा और बोलीं- देवर जी तुसीं वी आओ ना, तुहान्नूँ किन्ने मना कित्ता ए !(तुम भी आ जाओ, तुम्हें किसने मना किया है।)
और अपनी तरफ खींचती हुई बोलीं- एह तां घर दी गल्ल, घर विच ही हैगा न !(यह तो घर की बात है, घर में ही तो है)

अब मैं जो कि पिछले दो घंटे से 'किलस' रहा था, अब क्या बोलता !मैं तो एक के ना मिल पाने से कुढ़ा हुआ था अब तो दो-दो थीं।

और भाभी माला से बोलीं- कुड़िये, तूं घबरा ना, ऐह तां बड़ा ही बीब्बा मुंडा है, ऐ साड्डी गल्ल किसी नूँ नी दस्सेगा।(लड़की, तू घबरा मत, यग तो बड़ा मासून लड़का है, यह हमारी बात किसी को नहीं बतएगा।)

मैं तो एकदम खुश 'मुझे क्या साला चूतिया कुत्ते ने काटा है जो मैं किसी को बताऊँगा ?'
मैं तो बस आगे बढ़ कर भाभी से लिपट गया। अपना बांया हाथ भाभी की कमर पर रखते हुए, आगे बढ़ा कर माला की कमर पर रख दिया और उसे भी अपनी ओर खींचा।

अब समीकरण ऐसे था कि मेरा मुँह भाभी की तरफ, भाभी का मुँह मेरी तरफ और भाभी की पीठ माला की तरफ थी।
और मैंने माला को जब अपनी तरफ खींचा तो माला भाभी की पीठ से चिपक गई पर अभी भी वो घबराई सी लग रही थी।

मैंने अपना मुँह तो भाभी की चूची पर लगा दिया और चूसने लगा और अपने बांयें हाथ से

माला की एक चूची पकड़ कर मलनी शुरू कर दी। कभी पूरी चूची को मैं हाथ से दबा रहा था और कभी अपनी उंगली और अंगूठे से उसके छोटे-छोटे निप्पलों को मसल रहा था। मेरे लण्ड की तो पूछो ही मत बस, एकदम टाईट हो चुका था और झटके से मार रहा था।

भाभी ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे लण्ड को बड़े प्यार से सहलाने लगीं। उधर अब माला भी कुछ सयंत हो गई थी और उसने भी अपना हाथ भाभी के ऊपर से लाकर मेरी छाती पर फेरने लगी।

मुझे जोश तो पूरा आ चुका था, पर ऐसे मज़ा नहीं आ रहा था। साथ ही यह भी लग रहा था कि कहीं दो के चक्कर में मेरा माल ही जल्दी न निकल जाए। यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं।

मैंने अपना हाथ माला से हटा कर अपने दोनों हाथों से भाभी की कौली भर ली। और उन्हें अपने से ऊपर उठा कर करवट बदल ली। जिससे कि वो मेरे ऊपर से होकर मेरी बाईं तरफ आ गईं।

अब माला मेरी दांईं तरफ भाभी मेरी बांईं तरफ और मैं बीच में था। एक हाथ मैंने माला की सलवार में डाल दिया। उसका नाड़ा खुला हुआ ही था और दूसरा हाथ भाभी की सलवार में।

अब क्योंकि भाभी तो मेरी देखी भाली थी इसलिए मेरा ध्यान तो माला की तरफ था। पर कहीं भाभी नाराज़ न हो जाएँ, इसलिए मैं ज्यादा हरकत भाभी के साथ ही कर रहा था।

लगभग 2-3 मिनट के बाद भाभी बोलीं- बिट्टू, पहले तुम माला के साथ कर लो। मैं तो बाद में भी कर लूंगी। फिर एक पल रुक कर बोलीं- बिट्टू तुमने पहले कभी कुछ किया है क्या ?

मैं समझ गया था कि इस नाटक में मुझे भाभी का सहयोग करना है, तभी मेरा फायदा है। इसलिए मैं तुरंत बोला- भाभी, मैंने कभी भी ये सब किया नहीं है। मुझे तो आपको ही सिखाना पड़ेगा।

अब भाभी बोलीं- पहले तुम और माला की मार लो फिर मैं दूसरी बार में मरवा लूंगी।
'पर भाभी करना क्या है ?'

वो बोलीं- यार, तुम शुरू तो करो। जहाँ कहीं गलती करोगे, मैं सुधार दूंगी। सबसे पहले तो तुम दोनों पप्पी करो, मुँह से मुँह जोड़ कर।

अब दोस्तो, यह तो सभी जानते हैं कि 'अँधा क्या मांगे दो आँखें' और यहाँ तो बिना मांगे ही मिल रही थीं। सो मैंने अब अपना मुँह माला की तरफ कर लिया, उसके होंठों को अपने होंठों में भर कर चूसने लगा और अपनी जीभ उसके मुँह में डाल दी, अपना एक हाथ उसकी चूची पर और दूसरा उसकी सलवार में डाल कर अपनी उँगलियाँ उसकी चूत पर फेरनी शुरू कर दीं।

उसकी चूत थोड़ी थोड़ी गीली थी और उसकी चूत पर बाल भी नहीं थे। शायद, आज ही उसने साफ़ करे थे क्योंकि उसकी चूत के इर्द-गिर्द की चमड़ी बिल्कुल नर्म थी और किसी बच्चे के गाल जैसी कोमल लग रही थी।

जैसे ही मैंने हाथ वहाँ पर घिसा तो उसके मुँह से एक सिसकारी सी निकली- सीईई ईइहह आआअह्ह' और वो कस कर मुझ से लिपट गई।
जैसे ही उसने मुझे ज़ोर से अपनी बाँहों में कसा, मेरा हाथ उसकी चूची पर ज़ोर से कस गया।
मेरी बेचैनी बढ़ती जा क्योंकि 18-19 साल की उम्र में कंट्रोल करना कितना मुश्किल होता है, यह तो सभी जानते हैं।

इधर मैं माला के होंठ और जीभ चूस रहा था और उधर भाभी मेरे पीछे से अपने हाथ मेरी कमीज़ में डाल कर आगे की तरफ ला कर मेरे छोटे-छोटे निप्पलों को मसल रही थीं। जितना ज्यादा ज़ोर उधर से भाभी लगा रही थीं, उतना ही अधिक जोर मैं माला पर लगा रहा था।

अचानक माला ने मुझे पीछे को धक्का दिया। मेरी समझ में नहीं आया कि हुआ। उसने एक लम्बा सा साँस लिया और बोली- सांस तो लेने दो !
और अब उसने मेरी कमीज़ के बटन खोलने शुरू कर दिए। मैंने अपना पजामा उतार दिया और उसकी सलवार उतारने लगा।
अब तक वो मेरी कमीज़ के बटन खोल चुकी थी। मैं फट से उठा और कमीज़ और बनियान उतार दी। कमाल की बात यह थी कि अब ठण्ड नहीं लग रही थी।

उधर माला के भी सब कपड़े उतर चुके थे और भाभी भी अपने कपड़े उतार चुकी थीं।
मेरे जिस्म पर सिर्फ अंडरवियर था, माला की पेंटी भी उतर चुकी थी।

अब मैंने माला की चूचियों पर अपना मुँह रख दिया और बारी-बारी से चूचियों को चूसने लगा। कभी एक और कभी दूसरी। चूची चूसते-चूसते ही पलटी मार कर माला के ऊपर आ गया।

अब माला मेरे नीचे थी। मेरे मुँह में माला की चूची थी और भाभी मेरे सीधे हाथ की तरफ थी। मैंने तुरंत अपना हाथ बढ़ा कर भाभी की चूची पकड़ ली और ज़ोर-ज़ोर से दबाना शुरू कर दिया। क्योंकि मैंने कभी दो औरतों के साथ एक साथ चुदाई नहीं की थी। और वैसे भी मैं ज्यादा ट्रेंड भी नहीं था। इसलिए समझ में भी नहीं आ रहा था कि क्या करना है ?

भाभी ने मुझे थोड़ा परे को ढकेला और मेरा अंडरवियर पकड़ कर नीचे की ओर खींच दिया।

फिर बोलीं- बिट्टू, तू हुन्न अपना 'पप्पू' माला दी घुत्ती दे अंदर धुन्न दे !हौली हौली धक्कीं !ऐदा पह्ल्ली वार ए !ऐन्ने अज्ज तक नी ऐ काम्म कित्ता !(तू अब अपना पप्पू माला की खाई में डाल दे !पर धीरे से डालना, क्योंकि इसने पहले कभी किया नहीं है।)

कहानी जारी रहेगी।

मुझे आप अपने विचार मेल करें !
dr.dalbir66@yahoo.com
3825

Other stories you may be interested in

पांच सहेलियाँ अन्तरंग हो गयी

दोस्तो, आज बहुत दिनों बाद आपसे कुछ यादें शेयर करना चाहता हूँ. मेरी पिछली कहानी थी शादीशुदा लड़की का कुंवारी सहेली से प्यार आज की मेरी कहानी देहरादून में बन रहे पॉवर प्रोजेक्ट के इंजीनियरों की है. ये पांच इंजीनियर […]
Full Story >>>

यार से मिलन की चाह में तीन लंड खा लिए-5

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि लॉज का मैनेजर मेरी चूत को पेल रहा था और जीजा सामने कुर्सी पर बैठे हुए अपना लंड हिला रहे थे. लॉज के नौकर ने मेरे मुंह में लंड दे रखा था. जीजा को […]
Full Story >>>

भाभी की कुंवारी बहन की सीलतोड़ चुदाई

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा प्रणाम, मेरा नाम पंकज सिंह है. मैं पिछले 3 साल से दिल्ली में पढ़ाई कर रहा हूँ. मेरी उम्र अभी 24 साल है. मेरा कद 5 फुट 9 इंच है. मैं गोरे रंग का […]
Full Story >>>

क्लासमेट की मां चोद दी

बात तब की है जब मैं और कुलजीत कक्षा 12 में पढ़ते थे. कुलजीत की अभी दाढ़ी नहीं निकली थी. चिकना और गोल मटोल था. चूतड़ ऐसे कि गांड मारने को उत्तेजित करते थे. वह मेरे घर के पीछे वाली […]
Full Story >>>

मामा की बेटी की रस भरी चुदाई

दोस्तो, मेरा नाम परम है और मैं दिल्ली में रहता हूं। मैं हमेशा से ही हिन्दी सेक्स स्टोरी पढ़ा करता था। आज मैं भी आपको अपने साथ हुई एक सच्ची घटना बताना चाहता हूं। यह कहानी एकदम सच है। ये […]
Full Story >>>